



हिंदी पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना

¹अमिता झारिया, ²विक्रान्त शर्मा

^{1, 2}हिंदी विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.19204038>

Corresponding Author: अमिता झारिया

सारांश

हिन्दी पत्रकारिता के उस स्वर्णिम युग का गहन अध्ययन है, जिसमें भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना का अंकुरण और विकास हुआ। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि हिन्दी पत्रकारिता ने किस प्रकार सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और साहित्यिक चेतना को दिशा प्रदान की तथा किस तरह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे युगप्रवर्तकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से जनता में राष्ट्रभक्ति की भावना को जाग्रत किया। हिन्दी पत्रकारिता ने भारत में राष्ट्रीय चेतना को न केवल जन्म दिया, बल्कि उसे पोषित करते हुए स्वाधीनता आन्दोलन का वैचारिक आधार भी निर्मित किया। भारतेन्दु और द्विवेदी युग की पत्रकारिता भारतीय समाज के लिए दर्पण, मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत रही—जिसने राष्ट्र को उसकी सांस्कृतिक पहचान, भाषायी एकता और आत्मसम्मान की दिशा में अग्रसर किया।

मूल शब्द: पत्रकारिता, राष्ट्रीय चेतना, हिंदी अखबार

प्रस्तावना

पत्र-पत्रिकाओं की दृष्टि से आज हिन्दी भाषा समृद्ध मानी जाती है। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने अपने 150 वर्ष के जीवन में काफी प्रगति की है। आजकल भारत में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ ही संख्या में सबसे अधिक प्रकाशित होती हैं। अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों में भी अनेक पत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित होती रहती हैं। आज तो पत्रों की इतनी भरमार है कि लगभग प्रत्येक बड़े शहर में प्रति मास दो-चार पत्रों का प्रकाशन आरम्भ होता है और दो-चार किसी अभाव के कारण बन्द हो जाते हैं।

यह सभी जानते हैं कि पत्र-पत्रिकाएँ हमारे सामाजिक जीवन को कितना प्रभावित करती हैं। हम देश-विदेश की प्रत्येक हलचल का नवीनतम लेखा-जोखा उन्हीं के द्वारा प्राप्त करते हैं। छोटे-छोटे नगरों में पत्रों की पहुँच केवल शिक्षित वर्ग

तक ही रहती है, अन्य वर्ग वाले पत्र खरीदना-पैसे का अपव्यय मानते हैं। परन्तु कलकत्ता, बम्बई जैसे विशाल नगरों में निम्न आर्थिक और शैक्षिक-स्तर के व्यक्ति भी, जो अटक-अटक कर पढ़ पाते हैं, अखबार लिए हुए दिखाई देते हैं। यह हमारी व्यापक सामाजिक चेतना का प्रतीक है। आजकल तो छोटे-छोटे नगरों में भी दैनिक पत्र सामान्य, अर्द्धशिक्षित समाज में भी खूब पढ़े जाते हैं।

आज समाज का प्रत्येक व्यक्ति राजनीतिक चेतना की गतिविधि जानने को उत्सुक रहता है। अतः जिस प्रकार हम अपने साहित्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसका ऐतिहासिक विकास देखते हैं, उसी प्रकार पत्रों का ऐतिहासिक विकास-सम्बन्धी-ज्ञान भी हमारे साहित्य-ज्ञान की अभिवृद्धि में सहायक हो सकता है, क्योंकि पत्र-पत्रिकाएँ हमारे साहित्य का एक अत्यन्त उपयोगी तथा समृद्ध अंग हैं। हमारा

अधिकांश-साहित्य पहले पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही हमें पढ़ने को मिल जाता है। उसके बाद ही पुस्तकों के रूप में प्रकाशित होता है। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के क्रमिक विकास का इतिहास प्रस्तुत करने का सर्वप्रथम श्रेय भारतेन्दु-युगीन बाबू राधाकृष्णदास को है।

उन्होंने हिन्दी के 'सामाजिक पत्रों का इतिहास नामक पुस्तक लिखकर इस दिशा में सर्वप्रथम पग उठाया था। इसके उपरान्त बाबू बालमुकुन्द गुप्त के विभिन्न लेखों के संग्रहीत रूप 'गुप्त निबन्धावली द्वारा इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा। उसमें गुप्तजी द्वारा प्रस्तुत लगभग 16 उर्दू अखबारों और 25 हिन्दी अखबारों का संक्षिप्त परिचय दिया गया था। उपर्युक्त दोनों सूत्रों के आधार पर हिन्दी-संसार राजा शिवप्रसाद द्वारा प्रकाशित बनारस अखबार (सन् 1845) को हिन्दी का सर्वप्रथम अखबार मानने लगा था।

हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास

एक सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य को न केवल समाज में घटित होने वाली घटनाओं को जानने की इच्छा होती है, बल्कि देश-विदेश में चल रही स्थितियों को भी जानने की इच्छा होती है। आज के बाजारीकरण और वैश्वीकरण के युग में उसकी जिज्ञासा और भी तीव्र होती जा रही है। वह लंबे समय से ऐसी जानकारी प्राप्त करने का इच्छुक रहा है। ऐसी खबरों को सार्वजनिक रूप में प्रचारित करना पत्रकारिता के अंतर्गत आता है। वर्तमान समय में पत्रकारिता आधुनिक युग की चेतना, राष्ट्रीय चेतना, बौद्धिक जागरूकता और व्यापक जनभावना को प्रसारित करने का सबसे सुलभ और उन्नत माध्यम है। यह सामुदायिक भागीदारी, जनभावनाओं, आशाओं, आकांक्षाओं और सामाजिक परिस्थितियों को व्यक्त करने के लिए एक गतिशील मंच के रूप में कार्य करता है। आज लोग अपने सुख-दुख को व्यापक रूप से व्यक्त करते हैं। व्यापक रूप से प्रयुक्त होने वाला शब्द 'पत्रकारिता' अंग्रेजी शब्द 'जर्नलिज्म' का अनुवाद है। फ्रांसीसी शब्द 'जर्नल' और 'जर्नलिज्म', जिसका शाब्दिक अर्थ इस भाषा में 'एक दिन' और 'समाचार पत्र' है, ने मूल रूप से पत्रकारिता शब्द को प्रेरित किया। स्वतंत्रता से पहले भारत में पत्रकारिता शब्द के लिए कई पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया जाता था, जिनमें पत्रकारिता, समाचार रिपोर्टिंग, रिपोर्ट विश्लेषण, समाचार पत्र और संपादन शामिल हैं।

लेकिन बाद में केवल पत्रकारिता शब्द ही प्रचलन में रहा। लेकिन पत्रकारिता का परंपरागत अर्थ और दायरा बढ़ता गया। इसके व्यापक अर्थ और दायरे की ओर इशारा करते

हुए रोथमैन ई. मैक ने कहा है, 'परंपरागत रूप से पत्रकारिता का काम समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में समाचार एकत्र करना और लिखना, उनका संपादन और प्रकाशन करना या समाचारों पर टिप्पणी करना समझा जाता है, लेकिन इसका दायरा इससे कहीं अधिक व्यापक हो गया है।

इसमें विभिन्न संचार माध्यमों के माध्यम से सामुदायिक या रोचक लोक सामग्री की व्यवस्था भी शामिल है। आजकल लोग इसे सामान्यतः 'मीडिया' के नाम से पुकारते हैं। मीडिया को भी हम दो भागों में बांटते हैं: विद्युत चालित (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) और प्रिंट मीडिया (प्रिंट मीडिया)। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में समाचार पत्र, टीवी शो आदि शामिल हैं और प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र, साप्ताहिक या मासिक पत्रिकाएं आदि शामिल हैं। आजकल मीडिया का महत्व और प्रभाव बहुत तेजी से बढ़ रहा है, इसमें हर कोई दिलचस्पी रखता है, चाहे वह आम लोग हों, अधिकारी हों, नेता हों या सरकार के अधीन आने वाले अधिकारी।

उदंत मार्तंड में राष्ट्रीय चेतना

उदंत मार्तण्ड श्री युगल किशोर शुक्ल द्वारा 30 मई, 1826 को कोलकाता से प्रकाशित किया गया पहला हिंदी समाचार पत्र था। यह साप्ताहिक था, जो हर मंगलवार को प्रकाशित होता था और इसकी कीमत 2 रुपये वार्षिक थी। यह एक वर्ष और सात महीने तक प्रकाशित होता रहा। हिंदी भाषी कोलकातावासियों ने इस पत्रिका में कोई रुचि नहीं दिखाई, जैसा कि अपेक्षित था, जिसके कारण 4 दिसंबर 1827 को निम्नलिखित संपादकीय के साथ इसे असमय बंद कर दिया गया- "आज उदंत मार्तण्ड की मृत्यु का दिन है, अब सूर्य अस्त होने वाला है"। उदंत कोई राजनीतिक समाचार पत्र नहीं था; लेकिन हिंदी भाषा में इसके योगदान को कभी कम नहीं आंका जा सकता। 1788 में कानपुर में जन्मे शुक्ल जी कोलकाता के दीवानी कचहरी में प्रोसीडिंग रीडर थे और पत्रिका के संपादन की क्षमता रखते थे। हिंदी के अलावा वे ब्रजभाषा में भी लिख सकते थे। उन्होंने भले ही अंग्रेजी का विरोध किया हो, लेकिन उनकी नजर अंग्रेजी व्यापार पद्धति पर ही टिकी रही। उदंत मार्तण्ड की यात्रा बहुत छोटी होने के बावजूद, उन्होंने हिंदी पत्रकारिता के लिए मार्ग प्रशस्त किया, जो बाद में उन्होंने न केवल सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षणिक परिवर्तन के वाहक के रूप में कार्य किया, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता की आवाज भी बने।

काशी से प्रकाशित "बनारस अखबार" (1845) किसी भी हिंदी राज्य से प्रकाशित होने वाला पहला साप्ताहिक था। हालाँकि इस अखबार का नाम हिंदी में है, फिर भी इसे तीन भाषाओं

- देवनागरी, अरबी और फ़ारसी - के शब्दों का उपयोग करके लिखा गया था, जिससे आम लोगों के लिए इसे पढ़ना मुश्किल हो गया। अजीब बात यह है कि इस द्विभाषी उत्साही अख़बार के संपादक मराठी भाषी गोविंद रघुनाथ थट्टे थे। मुंशी सदा सुखलाल के संपादन में 1852 में आगरा से एक मासिक "बुद्धि प्रकाश" निकला। इस पत्रिका के लिए एक प्रख्यात फ़्रांसीसी प्रोफ़ेसर गरियांद टैस ने यहाँ तक कहा, "वे दिलचस्प निबंध और समाचार आइटम छापते थे। यहाँ तक कि इतिहास, भूगोल, गणित, शिक्षा और अन्य विषयों जैसे विशुद्ध शैक्षणिक मूल्यों के लेख भी इसमें प्रकाशित होते थे"।

1857 के विद्रोह के बाद हिंदी क्षेत्र में नई राजनीतिक चेतना जागृत हुई और ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के क्रूर अत्याचार के खिलाफ़ तीव्र विरोध हुआ। नई राजनीतिक चेतना और अपनी भाषा हिंदी के उत्थान के लिए उत्सुकता के कारण भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिंदी क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक सुधारों को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित हुए। वे हिंदी पाठकों के लिए रास्ते तलाशने के लिए तत्कालीन समाचार-पत्रों, पुस्तकों और पत्रिकाओं का अध्ययन करते थे। वे न केवल उर्दू, हिंदी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, बांग्ला बल्कि अंग्रेजी में भी पारंगत थे, जो पश्चिमी साहित्य से उनके जुड़ाव को दर्शाता है। 1868 में उन्होंने काशी से मासिक "कवि वचन सुधा" प्रकाशित करके हिंदी लेखकों को प्रेरित किया। शुरुआत में इसमें कवियों की संकलित रचनाएँ प्रकाशित होती थीं, लेकिन बाद में यह एक पाक्षिक बन गई जिसमें गद्य-रचनाएँ भी प्रकाशित होती थीं। 1875 में सुधा साप्ताहिक बन गई और 1885 तक हिंदी और अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित होने लगी। भारतेन्दु ने हिंदी भाषी क्षेत्रों में "सुधा" प्रकाशित करके एक चमक पैदा की थी। जब हम सभी अज्ञानता की गहरी नींद में डूबे हुए थे, तब उन्होंने जन चेतना लाई और लैंगिक समानता की वकालत की। उन्होंने भारत के स्वशासन, उसकी पूर्ण संप्रभुता का सपना देखा और यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से पहले की बात है। 17 मई, 1878 को कोलकाता से रुद्र दत्त शर्मा द्वारा एक प्रभावशाली पत्रिका "भारत मित्र" का संपादन किया गया। भारतेन्दु ने बताया कि भारत मित्र एक राजनीतिक पत्रिका थी, हालाँकि इसमें आनुवंशिकी विषय शामिल थे। हिंदी साहित्य और पत्रकारिता में भारतेन्दु युग को एक स्वर्णिम युग माना जाता है और यह न केवल हिंदी भाषी लोगों में जागरूकता का प्रतीक है, बल्कि ब्रिटिश दमन के खिलाफ़ तीखी प्रतिक्रिया का भी प्रतीक है।

राष्ट्रीय चेतना के विकास में हिन्दी कविताओं का योगदान
हिन्दी काव्य की समस्त काव्य धाराओं में राष्ट्रीय काव्य धारा का विशेष महत्व है। राष्ट्रीय कविताएँ राष्ट्र के विभिन्न वर्गों, समुदायों तथा प्रान्तों के बीच भावनात्मक एकता के विचारों को सुदृढ़ करती हैं। राष्ट्रीय कविताएँ जाति, समाज तथा प्रान्तीयता की संकीर्ण भावनाओं को समाप्त कर जनसाधारण के हृदय में कर्तव्य की भावना जागृत करती हैं। इन कविताओं से प्रेरित होकर अनेक वीरों ने देश की स्वतंत्रता के लिए हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुति दे दी। वस्तुतः हिन्दी कविता ने स्वतंत्रता आन्दोलन में राष्ट्र को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आधुनिक हिन्दी कविता के प्रथम चरण में नवजागरण का प्रभाव व्यापक था। व्यापार के लिए भारत आने वाली विदेशी जातियों ने यहाँ की राजनीतिक स्थिति का लाभ उठाकर छल-बल से भारत को अपना उपनिवेश बना लिया तथा अंग्रेजों ने भारतीय जनता पर तरह-तरह के अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए। उन्होंने भारत के राजाओं तथा जनता के साथ जिस प्रकार की नीति अपनाई, उससे समस्त भारतीय जनता आक्रोशित हो उठी। लॉर्ड डलहौजी के अमानवीय अत्याचारों ने भारतीय जनता के हृदय में विद्रोह की आग सुलगा दी तथा 1857 की क्रान्ति की ज्वाला भड़क उठी। 1857 की इस क्रान्ति ने उग्र रूप धारण कर लिया, लेकिन अंग्रेजों ने इसे उतनी ही क्रूरता और निर्दयता से दबा दिया। इस प्रकार 1857 की यह क्रान्ति असफल रही।

चूँकि राष्ट्रीयता की भावना खंडित अवस्था में थी, इसलिए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम असफल रहा। जैसे-जैसे राजनीतिक आंदोलनों की तीव्रता बढ़ती गई, राष्ट्रीय चेतना मजबूत होती गई। परिणामस्वरूप, पूरे देश ने ब्रिटिश शासन से मुक्त होने के लिए अपनी प्रांतीय संकीर्णता को त्यागते हुए एकता और संगठन के महत्व को समझा। अंग्रेज भारत में अपनी राजनीतिक जड़ें गहरी रखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने यहां की सांस्कृतिक चेतना को खत्म करने के लिए कदम उठाए। क्योंकि वे जानते थे कि किसी भी देश के लोगों को गुलाम बनाए रखने के लिए वहां की सांस्कृतिक चेतना को खत्म करना आवश्यक है। अंग्रेजों ने यहां की शिक्षा नीति में बदलाव करना शुरू कर दिया। पूरे देश में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली लागू की गई।

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्रीय चेतना का समावेश

हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी है। हिन्दी पत्रकारिता के आदि उन्नायक जातीय चेतना,

युगबोध और अपने महत् दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे। कदाचित् इसलिए विदेशी सरकार की दमन-नीति का उन्हें शिकार होना पड़ा था, उसके नृशंस व्यवहार की यातना झेलनी पड़ी थी। उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दी गद्य-निर्माण की चेष्टा और हिन्दु-प्रचार आन्दोलन अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भयंकर कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कितना तेज और पुष्ट था इसका साक्ष्य 'भारतमित्र' (सन् 1878 ई. में) 'सार सुधानिधि' (सन् 1879 ई.) और 'उचित वक्ता' (सन् 1880 ई.) के जीर्ण पृष्ठों पर मुखर है।

भारत में प्रकाशित होने वाला पहला हिंदी भाषा का अखबार, उदंत मार्तंड (द राइजिंग सन), 30 मई 1826 को शुरू हुआ। इस दिन को "हिंदी पत्रकारिता दिवस" के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि इसने हिंदी भाषा में पत्रकारिता की शुरुआत को चिह्नित किया था।

वर्तमान में हिन्दी पत्रकारिता ने अंग्रेजी पत्रकारिता के दबदबे को खत्म कर दिया है। पहले देश-विदेश में अंग्रेजी पत्रकारिता का दबदबा था लेकिन आज हिन्दी भाषा का झण्डा चहुँदिस लहरा रहा है। 30 मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

पत्रकारिता और आधुनिक चेतना के विविध आयाम

पत्रिकाएँ साहित्य की विविध विधाओं की जन्मस्थली थीं। पत्रिकाओं ने राष्ट्र के सभी आंदोलनों को भी बल दिया। देश की आकांक्षाओं, विचारों और प्रेरणा के संवाहक के रूप में पत्रिकाओं ने हिंदी को राष्ट्रीय चरित्र प्रदान किया। हिंदी के गद्य काल में निबंध, आत्मकथा, कथा, गद्य गीत, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ट, डायरी, आलोचना, समीक्षा आदि साहित्य की विधाएँ पुष्पित और पल्लवित हुईं, जिनके प्रणेता ऐसे लेखक थे जो आगे चलकर उत्कृष्ट लेखक बने। भारतीय जनता के विचार और अभिव्यक्ति, बौद्धिक विकास, सुदृढ़, व्यवस्थित और परिष्कृत भाषा का निर्माण तथा समृद्ध साहित्य की रचना लेखकों ने ही की। कवि चैनसुधा और सरस्वती ने हिंदी जगत की उल्लेखनीय सेवा की। यदि भारतेन्दु और हिन्दुस्तानी वेदी जैसे स्वर्णाक्षरों में रचे-बसे लेखक न होते तो बालकृष्ण, प्रताप नारायण मिश्र, बाबूविष्टु पराङ्कर, भाषापूजन, प्रेमचंद, निराला और पंडित नाथूराम जैसे सैकड़ों लेखक होते। शंकर मैथिलीशरण गुप्त, गोपाल शरण सिंह, मुकुटधर पांडेय, हिन्दू लालिमा, पद्मश्री शास्त्री, संस्कृत विद्वान सरस्वती उपाध्याय, कनियालाल मिश्र आदि यदि ऐसा नहीं कर पाते तो क्या होता। साहित्यकार ही हिन्दी जगत को नियंत्रित करने में सक्षम

थे। सच तो यह है कि यह सभी विधाओं को गतिशील बनाता है।

दलों ने अपना उत्तरदायित्व तय नहीं किया है। श्री रम्भा भमश्र के अनुसार श्रेष्ठ लेखन साहित्य है और श्रेष्ठ साहित्य लेखन है। वस्तुतः भाषा आन्दोलन को जनसाधारण में साहित्यिक चेतना जागृत करने और समसामयिक पहचान का श्रेय दिया जाता है। इसकी शुरुआत पिकारेस्क से हुई। इसका लक्ष्य भाषा के आदर्श स्वरूप की स्थापना और जनरुचि को परिष्कृत करना था। इसमें साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि जिस प्यारी हिन्दी को देश ने अपनी शक्ति माना और जिसे लोगों ने उत्साहपूर्वक अपनाया, वह हरिश्चन्द्र चन्द्रकाश में ही दिखाई देती है। पत्रकारिता, समाज के विचार और साहित्य का संगम, इतिहास का निर्माण और उस पर अपनी छाप छोड़ता है। पत्रिकाओं ने अंग्रेजी शासन के आक्रोश का कारण बनकर एक दिशा प्रदान की। समाज कवि चैन सुधा, हिंदी प्रदीप, यंग इंडिया, राजन सरस्वती, आज, सुदेश, कामराज भामाशाह आदि अनगिनत पत्रिकाओं ने भारतीय जनमानस की चेतना को अनेक प्रकार से प्रभावित किया।

"हम पूर्ण स्वतंत्रता और सत्ता प्राप्त करने के लिए स्वतंत्रता या मृत्यु का संकल्प लेते हैं।" बर्नार्ड ने कहा था कि एक कुशल पत्रकार एक लेखक से भिन्न नहीं होता। यदि साहित्य का अर्थ दुनिया को देखना और उसका आकलन करना है, तो पत्रकारिता भी यही है। पत्रकारिता के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि "सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि समाचार पत्र को जनता की राय को समझना और उसे व्यक्त करना चाहिए। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय विचारों को जागृत करना है, और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक अधिकारियों की कमियों और दोषों को आसानी से उजागर करना है।"

अंग्रेजी पत्रकार कैटलिप ने कहा था कि "समाचार पत्र समकालीन इतिहास की प्रेरक शक्ति है।" वास्तव में पत्रकारिता सत्य का संकलन, विश्लेषण और प्रकाशन है, जिसे पत्रकारों के विचारों पर आलोचनात्मक टिप्पणियों के साथ शब्दों, ध्वनियों और चित्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया जाता है। उल्लेखनीय है कि आज जीवन विविधताओं से भरा हुआ है और नए संसाधनों की प्रचुरता के कारण पत्रकारिता बहुआयामी हो गई है। इसलिए आज पत्रकार अपनी रुचि और रुझान के अनुसार अपने लिए विशेष क्षेत्रों का चयन कर रहे हैं, क्योंकि आज का युग विशेषज्ञता का युग है।

सरसुधा निधि और राष्ट्रीय चेतना

हिंदी प्रेस ने मई 1826 में 'ऊदुंत मार्तंड' नामक साप्ताहिक के प्रकाशन के साथ अपनी यात्रा शुरू की। जून 1854 में, पहला हिंदी दैनिक समाचार सुधावर्षण प्रकाशित हुआ। दोनों प्रकाशन कलकत्ता से थे। उत्तर-पश्चिमी प्रांतों (आधुनिक उत्तर प्रदेश) में, पहला हिंदी समाचार पत्र बनारस अखबार (बनारस समाचार) 1845 में राजा शिवप्रसाद के मार्गदर्शन में प्रकाशित हुआ था। हालाँकि ये कुछ पत्रिकाएँ और समाचार पत्र पहली बार 1826-60 की अवधि में प्रकाशित हुए थे, लेकिन हिंदी प्रेस ने वास्तव में 1860 के बाद ही गति पकड़ी।

19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में हिंदी में प्रकाशित साहित्यिक और राजनीतिक पत्रिकाओं के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं था। हालाँकि, जबकि कवि वचन सुधा (1868), हरीश चंद्र चंद्रिका (1874, बनारस से भारतेंदु हरसिंहचंद्र द्वारा शुरू की गई), भारत मित्र (1878), सर सुधा निधि (1879), उचित वक्ता (1880), और पंडित बालकृष्ण भट्ट द्वारा शुरू की गई हिंदी प्रदीप (1877) ने साहित्यिक और सामाजिक सरोकारों को आवाज दी, आर्य दर्पण, भारत वर्ष, ब्राह्मण, हिंदुस्थान और हिंदुस्थानी अपनी सामग्री में अधिक राजनीतिक थे और स्वर (मिश्रा 2004)। डॉ. रामरतन भटनागर, जिन्होंने प्रारंभिक हिंदी पत्रकारिता के विकास और उत्थान पर शोध किया है, ने तर्क दिया है: "...हिंदी प्रेस पर एक प्राथमिक उद्देश्य हावी था-धर्म, सामाजिक सुधार या हिंदी प्रदेश के लोगों द्वारा सार्वभौमिक रूप से अपनाई जाने वाली भाषा के बारे में कुछ निश्चित धारणा का प्रचार" (भटनागर 2003: XIII)।

निष्कर्ष

हमने राष्ट्र, राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रवाद और छद्म राष्ट्रवाद आदि अवधारणाओं को समझने का प्रयास किया है। इन बिंदुओं को गहराई से समझना डॉ. रमेश पोखरियाल के काव्य में राष्ट्रीय चेतना पर शोध कार्य के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय चेतना का अर्थ व्यापक है, जिसमें राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा, राष्ट्र का गौरव गान, राष्ट्र का वातावरण, राष्ट्र की प्रेरणा तथा राष्ट्र के प्रति उस देश के नागरिकों की समग्र सोच और भावना शामिल है। कुछ राष्ट्रवादी विचारक राष्ट्रीय चेतना की संकीर्ण व्याख्या करते हैं। उनके अनुसार राष्ट्रीय चेतना में केवल गौरव और वीरता भरी होती है। यह भावना राष्ट्रवाद को संकुचित करने का प्रयास मात्र है। अनेक विद्वानों ने राष्ट्र और राष्ट्रवाद को परिभाषित करने का प्रयास किया है। वैदिक साहित्य में राष्ट्र शब्द का

प्राचीन उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद में मंत्र लेखक कहते हैं कि प्रबुद्ध लोगों ने विश्व के कल्याण के लिए कार्य किया है। सृष्टि के आरंभ में राष्ट्र ने दीक्षा ली और तप किया। देश, राज्य और राष्ट्र शब्दों में मौलिक अंतर है। इनके अंग्रेजी रूप क्रमशः डिजिटल प्रोग्रामिंग और डिजिटल प्रोग्रामिंग हैं।

संदर्भ

1. मिश्रा अ. स्वाधीनता आंदोलन में मीडिया का योगदान. भोपाल: साहित्य सम्मेलन; c2018।
2. सिन्हा प. राष्ट्रीय चेतना के सशक्त माध्यम के रूप में पत्रकारिता. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन; c2011।
3. शुक्ल अ. भारतीय पत्रकारिता और लोकतंत्र. इलाहाबाद: हिंदी साहित्य अकादमी; c2006।
4. चौहान अ. भारतीय मीडिया का इतिहास और दिशा. नई दिल्ली: भारतीय अध्ययन केंद्र; c2020।
5. सिंह द. क्रांतिकारी लेखन और हिन्दी पत्रकारिता. ग्वालियर: शोधप्रकाशन संस्थान; c2017।
6. वाजपेयी व. भारत की पत्र-पत्रिकाओं का राष्ट्रीय स्वर. प्रयागराज: ज्ञानभारती; c2003।
7. सक्सेना र. हिन्दी पत्रकारिता और भारतीय समाज. आगरा: भारतीय विद्या निकेतन; c2010।
8. पाठक क. भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता की वैचारिक पृष्ठभूमि. वाराणसी: संस्कार पब्लिशिंग; c2016।
9. गुप्ता आ. फाँसी अंक, गोली अंक और पत्रकारिता का प्रतिरोधी स्वरूप. दिल्ली: हिंदी संवाद; c2018।
10. श्रीवास्तव न. भारतीय मीडिया और स्वतंत्रता चेतना की विरासत. भोपाल: संस्कार प्रकाशन; c2021।

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.